Toppersnotes
Unleash the topper in you

UGC-NET

समाजशास्त्र

NATIONAL TESTING AGENCY (NTA)

पेपर - 2 || भाग - 1

SIERRA INNOVATIONS

UGC NET

समाजशास्त्र

विषय-सूची

Unit - 1		Page No.
1.	समाजशास्त्र की परिभाषा, क्षेत्र एवं विषय–वस्तु	1
2.	शास्त्रीय समाजशास्त्रीय परम्पराएँ	6
3.	संरचना–प्रकार्यवाद एवं संरचनावाद	28
4.	व्याख्यात्मक एवं निर्वचनात्मक परम्पराएँ	43
5.	उत्र – आधुनिकतावाद, उत्र– संरचनावाद, उत्र –उपनिवेशवाद भारतीय	58
6.	भारतीय चिन्तक (विचारक)	76
Unit – 2		
1.	सामाजिक यथार्थ धारणा	100
2.	सामाजिक विज्ञान में ज्ञानमीमांसा	110
3.	आचारशास्त्र	116
4.	राजनीति शास्त्र	122
5.	प्राक्कल्पना की परिभाषा एवं अर्थ	126
6.	तथ्य एवं सिद्धान्त	133
7.	समाजशास्त्रीय पद्धतियाँ	145
8.	सामाजिक शोध की विधियाँ एवं तकनीकें	147
Unit – 3		
1.	समाजशास्त्रीय अवधारणाए	185
2.	सामाजिक मूल्य, मानदण्ड तथा नियम	198
3.	सामाजिक संस्थाएँ	206
4.	सामाजिक स्तरीकरण	254
5.	सामाजिक परिवर्तन और प्रक्रियाएँ	284
6.	सामाजिक विकास की अवधारणा	293

Unit - 1

समाजशास्त्र की परिभाषा, क्षेत्र तथा विषय – वस्तु
(DEFINITION, SCOPE AND SUBJECT - MATTER OF SOCIOLOGY)

यद्यपि मनुष्य आदि-काल से ही समाज में रहता है, परन्तु उसने समाज और अपने स्वयं के अध्ययन में काफी देर से रुचि लेना प्रारम्भ किया । सर्वप्रथम मनुष्य ने प्राकृतिक घटनाओं का अध्ययन किया, अपने चारों ओर के पर्यावरण को समझने का प्रयत्न किया और अन्त में स्वयं के अपने समाज के विषय में सोचना-विचारना शुरू किया । यही कारण है कि पहले 9 प्राकृतिक विज्ञानों का विकास हुआ और उसके पश्चात् – सामाजिक विज्ञानों का । सामाजिक विज्ञानों के विकास-क्रम मेंसमाजशास्त्र का एक विषय के रूप में विकास काफी बाद में हुआ । पिछली शताब्दी में ही इस नवीन विषय को अस्तित्व में आने का अवसर मिला । इस दृष्टि से अन्य सामाजिक विज्ञानों की तुलना में समाजशास्त्र एक नवीन विज्ञान है ।

समाजशास्त्र की आवश्यकता का अनुभव जटिल समाजों और विभिन्न सामाजिक घटनाओं को समझने के लिए किया गया **A** धीरे-धीरे इस शास्त्र का महत्व बढता ही गया । समाजशास्त्र के विकास के सम्बन्ध में टी. बी. बोटोमोर (Bottomore) ने लिखा है कि हजारों वर्षों से लोगों ने उन समाजों एवं समूहों का अवलोकन और चिन्तन किया है जिसमें वे रहते हैं । फिर भी समाजशास्त्र एक आधुनिक विज्ञान है और एक शताब्दी से अधिक पुराना नहीं है । डान मार्टिण्डेल (Don Martindale) ने बताया है कि यदि मानव प्रकृति से दार्शनिक है तो स्वभावतः वह समाजशास्त्री भी है क्योंकि सामाजिक जीवन उसका स्वाभाविक उद्देश्य है । परन्तु समाज में रहने, सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करने और सामाजिक जीवन में भागीदार बनने मात्र से व्यक्ति समाजशास्त्री नहीं बन जाता । अतः आवश्यकता इस बात की है कि यह समझने का प्रयत्न किया जाये कि वास्तव में समाजशास्त्र क्या है?

समाजशास्त्र 'समाज' का ही विज्ञान या शास्त्र है । इसके द्वारा समाज या सामाजिक जीवन का अध्ययन किया जाता है । इस नवीन विज्ञान को जन्म देने का श्रेय फ्रांस के प्रसिद्ध विद्वान आगस्त कॉम्ट (Auguste Comte) को है । आपने ही सर्वप्रथम सन् 1838 में इस नवीन शास्त्र को 'समाजशास्त्र' (Sociology) नाम दिया । इसी कारण आपको 'समाजशास्त्र का जनक' (Father ofSociology) कहा जाता है । समाजशास्त्र के प्रारम्भिक लेखकों में कॉम्ट के अलावा दुर्खीम, स्पेन्सर तथा मैक्स वेबर के नाम भी विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । इन सभी विद्वानों के विचारों का समाजशास्त्र के एक विषय के रूप में विकास में काफी योगदान है ।

समाजशास्त्र की उत्पत्ति के मूल स्रोतों पर प्रकाश डालते हुए गिन्सबर्ग (Ginsberg) ने लिखा है कि मोटे तौर पर यह कहा जा सकता है कि समाजशास्त्र की उत्पत्ति राजनीतिक दर्शन, इतिहास, विकास के जैविकीय सिद्धान्त एवं उन सभी सामाजिक और राजनीतिक सुधार के आन्दोलनों पर आधारित है जिन्होंने सामाजिक दशाओं का सर्वेक्षण करना आवश्यक समझा । स्पष्ट है कि समाजशास्त्र की उत्पत्ति में राजनीतिक दर्शन, इतिहास, विकास के जैविकीय सिद्धान्त तथा सामाजिक एवं राजनीतिक सुधार आन्दोलनों का योग रहा है । समाजशास्त्र की उत्पत्ति उन प्रयत्नों का परिणाम है जिनके द्वारा सामाजिक ज्ञान की विभिन्न शाखाओं के बीच पाये जाने वाले सामान्य आधार को ढूंढा गया ।

समाजशास्त्र का अर्थ एवं परिभाषा

शाब्दिक अर्थ की दृष्टि से विचार करने पर हम पाते हैं कि समाजशास्त्र दो शब्दों से मिल कर बना है जिनमें से पहला शब्द है 'सोशियस' (Socius) लैटिन भाषा से और दूसरा शब्द 'लोगस' (Logas) ग्रीक भाषा से लिया गया है । 'सोशियस' का अर्थ है– समाज और 'लोगस' का शास्त्र । इस प्रकार 'समाजशास्त्र' (Sociology) का शाब्दिक अर्थ समाज का शास्त्र या समाज का विज्ञान है । जॉन स्टुअर्ट मिल ने 'Sociology' के स्थान पर 'इथोलॉजी' (Ethology) शब्द को प्रयुक्त करने का सुझाव दियाऔर कहा कि 'Sociology' दो भिन्न भाषाओं की एक अवैध सन्तान है, लेकिन अधिकांश विद्वानों ने मिल के सुझाव को नहीं माना । उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से हरबर्ट स्पेन्सर (Herbert Spencer) ने समाज के क्रमबद्ध अध्ययन का प्रयत्न किया और अपनी पुस्तक का नाम 'सोशियोलॉजी' रखा । सोशियोलॉजी (Sociology) शब्द की उपयुक्तता के सम्बन्ध में आपने लिखा है कि प्रतीकों की सुविधा एवं सूचकता उनकी उत्पत्ति सम्बन्धी वैधता से अधिक महत्वपूर्ण है । स्पष्ट है कि शाब्दिक दृष्टि से समाजशास्त्र का अर्थ समाज (सामाजिक सम्बन्धों) का व्यवस्थित एवं क्रमबद्ध ढंग से अध्ययन करने वाले विज्ञान से है ।

जब हम इस प्रश्न पर विचार करते हैं कि समाजशास्त्र क्या है तो विभिन्न समाजशास्त्रियों के दृष्टिकोणों में भिन्नता देखने को मिलती है, लेकिन इतना अवश्य है कि अधिकांश समाजशास्त्री समाजशास्त्र को 'समाज का विज्ञान' मानते हैं । समाजशास्त्र का अर्थ स्पष्ट करने की दृष्टि से विभिन्न विद्वानों ने समय-समय पर विचार व्यक्त किये हैं । उनके द्वारा दी गयी समाजशास्त्र की परिभाषाओं को प्रमुखतः निम्नलिखित चार भागों में बांटा जा सकता है :

(1) समाजशास्त्र समाज के अध्ययन के रूप में ।
(2) समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों के अध्ययन के रूप
(3) समाजशास्त्र समूहों के अध्ययन के रूप में ।
(4) समाजशास्त्र सामाजिक अन्तःक्रियाओं के अध्ययन के रूप में
अब इनमें से प्रत्येक पर हम यहां विचार करेंगे ।

(1) समाजशास्त्र समाज के अध्ययन के रूप में

गिडिंग्स, समनर, वार्ड, आदि कुछ ऐसे समाजशास्त्री हुए हैं जिन्होंने समाजशास्त्र को एक ऐसे विज्ञान के रूप में परिभाषित करने का प्रयत्न किया जो सम्पूर्ण समाज का एक समग्र इकाई के रूप में अध्ययन कर सके ।

वार्ड (Ward) के अनुसार, ''समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है ।''

गिडिंग्स (Giddings) के अनुसार, ''समाजशास्त्र समाज का वैज्ञानिक अध्ययन है ।'' आपने ही अन्यत्र लिखा है कि समाजशास्त्र समाज का एक समग्र इकाई के रूप में व्यवस्थित वर्णन एवं व्याख्या है ।

ओडम (Odum) के अनुसार, ''समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो समाज का अध्ययन करता है ।'' इन परिभाषाओं के आधार पर यह तो स्पष्ट है कि समाजशास्त्र समाज का वैज्ञानिक अध्ययन है, परन्तु यहां एक स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि समाजशास्त्र किस समाज का अध्ययन करता है–मानव समाज का या पशु समाज का अथवा दोनों का । यहां हमें यह स्पष्टतः समझ लेना चाहिए कि समाजशास्त्र के अन्तर्गत मानव समाज का अध्ययन किया जाता है । जी. डंकन मिचेल (GD Mitchell) के अनुसार, ''समाजशास्त्र मानव समाज के संरचनात्मक पक्षों (Structural Aspects) का विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक शास्त्र है ।''

(2) समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों के अध्ययन के पर

जहां कुछ विद्वानों ने समाजशास्त्र को समाज का विज्ञान माना है, वहीं कुछ अन्य ने इसे सामाजिक सम्बन्धों का व्यवस्थित अध्ययन कहा है, लेकिन समाज के विज्ञान और सामाजिक सम्बन्धों के अध्ययन में कोई अन्तर नहीं है । इसका कारण यह है कि सामाजिक सम्बन्धों की व्यवस्था को ही समाज के नाम से पुकारा गया है । समाजशास्त्र को सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन मानने वाले कुछ प्रमुख विद्वानों की परिभाषाएं इस प्रकार हैं :

मैकाइवर तथा पेज (MacIver and Page) के अनुसार, ''समाजशास्त्र सामाजिक सम्बन्धों के विषय में है, सम्बन्धों के इसी जाल को हम समाज कहते हैं ।'' आपने अन्यत्र लिखा है, ''सामाजिक सम्बन्ध मात्र समाजशास्त्र की विषय–वस्तु है ।''

क्यूबर (J.F. Cuber) के अनुसार, ''समाजशास्त्र को मानव सम्बन्धों (Human relationships) के वैज्ञानिक ज्ञान की शाखा के रूप में परिभाषित किया जा सकता है ।''

मैक्स वेबर (Max Weber) के अनुसार, ''समाजशास्त्र प्रधानतः सामाजिक सम्बन्धों तथा कृत्यों का अध्ययन है ।'' इसी प्रकार के विचारों को व्यक्त करते हुए वान वीज (Von Wiese) ने लिखा है, ''सामाजिक सम्बन्ध ही समाजशास्त्र की विषय–वस्तु का एकमात्र वास्तविक आधार है ।''

आरनोल्ड एम. रोज (Arnold M- Rose) के अनुसार, ''समाजशास्त्र मानव सम्बन्धों का विज्ञान है ।''

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि समाजशास्त्र एक ऐसा विज्ञान है जो सामाजिक सम्बन्धों का व्यवस्थित अध्ययन करता है । सामाजिक सम्बन्धों के जाल को ही समाज कहा गया है । मनुष्य पारस्परिक जागरूकता (Mutual Awareness) और सम्पर्क (Contact) के आधार पर विभिन्न व्यक्तियों एवं समूहों के साथ अगणित सामाजिक सम्बन्ध स्थापित करता है । जब अनेक व्यक्ति और समूह विभिन्न इकाईयों के रूप में एक–दूसरे के साथ सम्बन्धित हो जाते हैं, तब इन सम्बन्धों के आधार पर जो कुछ बनता है, वही 'समाज' (Society) कहलाता है । ऐसे समाज या सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन समाजशास्त्र के अन्तगर किया जाता है ।

(3) समाजशास्त्र समूहों के अध्ययन के रूप में

नोब्स, हाइन तथा फ्लेमिंग के अनुसार, ''समाजशास्त्र समूहों में लोगों का वैज्ञानिक और व्यवस्थित अध्ययन है ।''

इसका तात्पर्य है कि समाजशास्त्र व्यवहार के उन प्रतिमानों की ओर ध्यान देता है जो संगठित समुदायों में रहने वाले लोगों के में पाये जाते हैं ।

जॉन्सन (Johnson) ने समाजशास्त्र को सामाजिक समूहों का अध्ययन माना है । आपके ही शब्दों में, ''समाजशास्त्र सामाजिक समूहों का विज्ञान है । सामाजिक समूह सामाजिक अन्तःक्रियाओं की ही एक व्यवस्था है ।'' आपकी मान्यता है कि समाजशास्त्र को ''सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन'' कह देने से काम नहीं चलेगा और हम किसी निश्चित निष्कर्ष पर भी नहीं पहुंच सकेंगे । अतः समाजशास्त्र को सामाजिक समूहों का विज्ञान माना जाना चाहिए । सामाजिक समूह का अर्थ जॉन्सन के अनुसार केवल व्यक्तियों के समूह से नहीं होकर व्यक्तियों के मध्य उत्पन्न होने वाली अन्तःक्रियाओं की व्यवस्था से है । विभिन्न व्यक्ति जब एक-दूसरे के सम्पर्क में आते हैं तो उनमें सामाजिक अन्तःक्रिया उत्पन्न होती है और इन्हीं अन्तःक्रियाओं के आधार पर समूह बनते हैं । समाजशास्त्र सामाजिक अन्तःक्रियाओं के आधार पर बनने वाले ऐसे सामाजिक समूहों का अध्ययन ही है । जॉन्सन ने समाजशास्त्र में उन्हीं सामाजिक सम्बन्धों को महत्व दिया है जो सामाजिक अन्तःक्रियाओं के परिणामस्वरूप उत्पन्न होते हैं । आपने लिखा है, ''समाजशास्त्र के अन्तर्गत व्यक्तियों में हमारी रुचि केवल वहीं तक है जहां तक वे सामाजिक अन्तःक्रियाओं की व्यवस्था में भाग लेते हैं ।'' स्पष्ट है कि समूह के निर्माण में सामाजिक अन्तःक्रियाएं आधार के रूप में हैं और इन्हीं के आधार पर बनने वाले सामाजिक समूहों का अध्ययन समाजशास्त्र में किया जाता है ।

सामाजिक समूहों के अध्ययन को समाजशास्त्र में इतना महत्व क्यों दिया जाता है, इसे भी हमें यहां समझ लेना चाहिए । व्यक्ति समूह में रहता है तथा उसकी विभिन्न गतिविधियों में भाग लेता है और अपनी आवश्यकताओं या लक्ष्यों की पूर्ति करता है । वह परिवार-समूह, नाते-रिश्तेदारों के समूह, जाति-समूह और खेल-कूद के साथियों के समूह, पडोस-समूह, विद्यालयसमूह, व्यावसायिक समूह, धार्मिक समूह एवं राजनीतिक दल में भाग लेता है और यही उसका विकास होता है । इनमें से प्रत्येक समह सामाजिक अन्तःक्रियाओं की एक व्यवस्था है, अतः जब हम समाजशास्त्र में सामाजिक समूहों का अध्ययन करते हैं तो अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक अन्तःक्रियाओं के व्यवस्थित अध्ययन के महत्व को भी स्वीकार करते हैं ।

(4) समाजशास्त्र सामाजिक अन्तः क्रियाओं के अध्ययन

कुछ समाजशास्त्री समाजशास्त्र को सामाजिक अन्तःक्रियाओं के रूप मेंपरिभाषित करते हैं । इनकी मान्यता है कि सामाजिक सम्बन्धों की बजाय सामाजिक अन्तःक्रियाएं समाज का वास्तविक आधार हैं । सामाजिक सम्बन्धोंकी संख्या इतनी अधिक है कि उनका ठीक से अध्ययन किया जाना बहुत ही कठिन है । अतः समाजशास्त्र में सामाजिक अन्तःक्रियाओं का अध्ययन किया जाना चाहिए । अन्तःक्रिया (Interaction) का तात्पर्य दो या दो से अधिक व्यक्तियों या समूहों का जागरूक अवस्था में एक-दूसरे के सम्पर्क में आना और एक-दूसरे के व्यवहारों को प्रभावित करना है । सामाजिक सम्बन्धों के निर्माण का आधार अन्तःक्रिया ही है । यही कारण है कि समाजशास्त्र को सामाजिक अन्तःक्रियाओं का विज्ञान माना गया है ।

गिलिन और गिलिन (Gillin and Gillin) के अनुसार, ''व्यापक अर्थ में समाजशास्त्र व्यक्तियों के एक-दूसरे के सम्पर्क मे आने के फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली अन्तःक्रियाओं का अध्ययन कहा जा सकता है ।''

गिन्सबर्ग (Ginsberg) के अनुसार, ''समाजशास्त्र मानवीय अन्तःक्रियाओं और अन्तःसम्बन्धों, उनकी दशाओं और परिणामों का अध्ययन है ।''

जार्ज सिमेल (George Simmel) के अनुसार, ''समाजशास्त्र मानवीय अन्तःसम्बन्धों के स्वरूपों का विज्ञान है ।''

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि समाजशास्त्र सामाजिक अन्तःक्रियाओं का विज्ञान है । कुछ अन्य विद्वानों ने समाजशास्त्र को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है :

मैक्स वेबर (Max Weber) के अनुसार, ''समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो सामाजिक क्रिया (Social Action) का विश्लेषणात्मक बोध कराने का प्रयत्न करता है ।" आपके अनुसार सामाजिक क्रियाओं को समझे बिना समाजशास्त्र को समझना कठिन है । इसका कारण यह है कि जहां समाजशास्त्र में सामाजिक सम्बन्धों एवं सामाजिक अन्तःक्रियाओं का विशेष महत्व है, वहां सामाजिक क्रियाओं को समझे बिना इन दोनों को नहीं समझा जा सकता, स्वयं अन्तःक्रियाओं का निर्माण सामाजिक क्रियाओं से ही होता है । अतः मैक्स वेबर ने समाजशास्त्र में सामाजिक क्रियाओं को समझने पर विशेष जोर दिया है । समाजशास्त्र में सामाजिक क्रिया के अध्ययन को टालकट पारसन्स ने भी काफी महत्व दिया है । आपकी मान्यता यह है कि सम्पूर्ण सामाजिक संरचना, सामाजिक सम्बन्धों, समाज तथा सामाजिक व्यवस्था को 'क्रिया' की धारणा के माध्यम से ही समझा जा सकता है ।

सोरोकिन (Sorokin) के अनुसार, ''समाजशास्त्र सामाजिक-सांस्कृतिक प्रघटनाओं के सामान्य स्वरूपों, प्रकारों और अनेक अन्तर्सम्बन्धों का सामान्य विज्ञान है ।'' आपने अन्यत्र बताया है कि समाजशास्त्र समाज के उन पहलुओं का अध्ययनहै जो आवर्तक (Recurrent), स्थायी और सार्वभौमिक है और जो प्रत्येक सामाजिक विज्ञान की विषय-वस्तु से सम्बन्धित है, किन्तु फिर भी कोई भी सामाजिक विज्ञान उनका विशेष रूप से अध्ययन नहीं करता ।''

अपने व्यापक रूप में समाजशास्त्र समाज व्यवस्था (Social System) का अध्ययन करने वाला विज्ञान है । समाज व्यवस्था में सामाजिक प्रक्रिया, सामाजिक सम्बन्ध, सामाजिक नियन्त्रण सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक संस्थाएं तथा इनसे सम्बन्धित प्रभाव एवं परिस्थितियां आती है । अन्य शब्दों में समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो समाज व्यवस्था से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों का अध्ययन करता है ।

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि समाजशास्त्र सम्पूर्ण समाज का एक समग्र इकाई रूप में अध्ययन करने वाला विज्ञान है । इसमें सामाजिक सम्बन्धों का व्यवस्थित अध्ययन किया जाता है । सामाजिक सम्बन्धों को ठीक से समझने की दृष्टि से सामाजिक क्रिया, सामाजिक अन्तःक्रिया एवं सामाजिक मूल्यों के अध्ययन पर इस शास्त्र में विशेष जोर दिया जाता है ।

शास्त्रीय समाजशास्त्रीयपरम्पराएँ
(Classical Sociological Traditions)

1700 ई. के बाद अर्थात् 18वीं और 19वीं शताब्दी में समाजशास्त्र में कई सामाजिक विचारक उभर कर आए, जिनके विचार धार्मिक मान्यताओं से हटकर वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित थे । इन समाजशास्त्रीय विचारकों में इमाइल दुर्खीम, मैक्स वेबर तथा कार्ल मार्क्स महत्वपूर्ण हैं, जिन्होंने शास्त्रीय समाजशास्त्र परम्परा को अध्ययनोन्मुखी बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया ।

समाजशास्त्रीय परम्पराएँ और आधुनिकता दोनों ही विचार, मूल्यों तथा संस्थाओं का सम्मिलित रूप हैं । ये विचार, मूल्य और संस्थाएँ परम्परा और आधुनिकता में भिन्न-भिन्न होते हैं । परम्परा समाज की एक सामूहिक पद्धति है जो सामाजिक संगठन के सभी स्तरों में व्याप्त होती है । परम्परा सामाजिक विरासत है, जिसके तीन तत्व मूल्यों की व्यवस्था, सामाजिक संरचना और उसके परिणामस्वरूप व्यक्तित्व की संरचना होते हैं । समाजशास्त्र में परम्परा का सामाजिक-सांस्कृतिक अथवा कार्यात्मक दृष्टिकोण अपनाया जाता है । परम्परा का अर्थ अपेक्षाकृत आधुनिक काल में विकसित हुआ है । किसी भी समाज में विकास निरन्तर होता रहता है, लेकिन फिर भी कुछ ऐसे तत्व, संस्था और सामाजिक संरचना के कुछ अंग स्थायी रूप से बने रहते हैं, जिसे परम्परा कहा जाता है । समाजशास्त्रीय परम्परा के प्रमुख विद्वान् इमाइल दुर्खीम, मैक्स वेबर तथा कार्ल मार्क्स आदि हैं । इनका विस्तृत विवरण निम्न प्रकार है

इमाइल दुर्खीम (Emile Durkheim)

समाजशास्त्र को एक अलग विषय के रूप में पहचान दिलाने वाले समाजशास्त्री इमाइल दीम का जन्म 15 अप्रैल, 1858 को फ्रांस के एक छोटे से कस्बे एपीनल में हुआ था । यहुदी परिवार में जन्मे दीम बचपन से ही प्रतिभा सम्पन्न थे । एपिनल कॉलेज से स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के पश्चात् इन्होंने पेरिस की विख्यात इकोल अकादमी में शिक्षा ग्रहण की । 1885 ई. में ये शिक्षा ग्रहण करके जर्मनी गए और अर्थशास्त्र, लोक मनोविज्ञान और सांस्कृतिक मानवशास्त्र का विस्तृत अध्ययन किया । इस दौरान ये बोर्डियक्स विश्वविद्यालय में प्रोफेसर एस्पिनास से प्रभावित हुए । 1896 ई. में ये बोर्डियक्स विश्वविद्यालय में समाज विज्ञान के प्रोफेसर बने ।

वर्ष 1902 में इन्होंने पेरिस विश्वविद्यालय में अध्यापक के रूप में योगदान दिया । साथ ही 1838 ई. में शुरू किए गए ऑगस्ट कॉम्टे के कार्यों को बढाते हुए वर्ष 1913 में समाजशास्त्र के पहले प्रोफेसर बनकर समाजशास्त्र को एक विषय के रूप में प्रतिस्थापित किया । इस दौरान इन्होंने विभिन्न सिद्धान्तों व विचारों को जन्म दिया । 15 नवम्बर, 1917 को 59 वर्ष की आयु में इनकी मृत्यु हो गई । यद्यपि इनके विचार आधुनिक व वर्तमान समय में भी प्रेरणादायक हैं ।

फ्रांसीसी समाजशास्त्री इमाइल दुर्खीम ने सामाजिक तथ्य (Social Fact), आत्महत्या (Suicide), धर्म (Religion) व श्रम विभाजन (Division of Labour) आदि के विषय में उल्लेखनीय योगदान दिया है । दुर्खीम समाजशास्त्र के प्रत्यक्षवादी, विकासवादी तथा प्रकार्यवादी (धर्म) समाजशास्त्री थे । उन्होंने समाजशास्त्र को ठोस वैज्ञानिक अध्ययन पद्धति एवं व्यवस्थित विषय–वस्तु प्रदान की है और समाजशास्त्र को समाज का अध्ययन करने वाला विज्ञान कहा है । दुर्खीम ने सामाजिक अन्तरक्रिया का गहन अध्ययन किया और इसी आधार पर महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय विचार प्रस्तुत किए ।

दुर्खीम के विचार

- दुर्खीम ने समाज में घटित होने वाली सभी घटनाओं का कारण समाज को बताया है । उन्होंने कहा कि व्यक्ति की अपेक्षा समाज को प्रधानता देनी होगी, क्योंकि व्यक्ति समाज की देन है ।
- समाज प्रकार्यात्मक एकीतन्त्र है अर्थात इसे आपस में सम्बन्धित अवयवों के एक तन्त्र के रूप में देखना चाहिए, क्योंकि इसके किसी भी अवयव को पृथक् करके नहीं समझा जा सकता है । दुर्खीम की प्रसिद्ध रचना द डिवीजन ऑफ लेबर इन सोसाइटी तथा द रूल्स ऑफ सोशियोलॉजिकल मेथड में प्रकार्यवाद की विवेचना की गई है ।
- समाज एक नैतिक वास्तविकता है जो सामूहिक मनोभावों, विचारों व भावनाओं का प्रतिनिधित्व करता है ।

दुर्खीम का समाजशास्त्रीय सिद्धान्त **(Sociological Principles of Durkheim)**

दुर्खीम द्वारा प्रतिपादित समाजशास्त्रीय सिद्धान्त की अवधारणा उनकी पुस्तक 'रूल्स ऑफ सोशियोलॉजिकल मेथड' में विस्तार से दी गई है । दुर्खीम के सामाजिक तथ्य का विचार हरबर्ट स्पेन्सर द्वारा दिए गए व्यक्तिवादी विचारों से बिल्कुल भिन्न है । उनका मत था कि जितनी भी सामाजिक क्रियाएँ हैं, उनका विश्लेषण सामाजिक सन्दर्भ के अधीन ही किया जाना चाहिए अर्थात सामाजिक क्रियाओं को समझने का आधार समाज है । इसलिए व्यक्ति या मनोविज्ञान को आधार मानकर जो समाजशास्त्रीय अध्ययन किए जाते हैं, वह हमेशा अवैज्ञानिक माने जाते हैं ।

दुर्खीम ने समाजशास्त्र को सामाजिक तथ्यों का अध्ययन बताया है । दुर्खीम का मानना था कि जिस प्रकार सभी विशेषज्ञ अपने–अपने अध्ययन के विषय का चयन करते हैं, ठीक उसी प्रकार समाजशास्त्रियों ने भी सामाजिक तथ्य का चयन कर उनका विश्लेषण विस्तार से किया है, क्योंकि सामाजिक तथ्य ही समाजशास्त्रीय अध्ययन का प्रमुख अध्ययन क्षेत्र है । दुर्खीम ने ''सामाजिक तथ्यों को वस्तुओं की तरह समझाने पर बल'' दिया है ।

सामाजिक तथ्य को उन्होंने एक वस्तु, एक चीज या एक भौतिक पदार्थ के रूप में देखा है । जिस प्रकार एक भौतिक पदार्थ का अध्ययन भौतिकी में किया जाता है, ठीक उसी प्रकार समाजशास्त्री 'सामाजिक तथ्य' का अध्ययन करते हैं । दुर्खीम ने सामाजिक तथ्य के स्वरूप के वर्णन में आत्महत्या केविवेचन का वर्णन विस्तार से किया है । आत्महत्या व्यक्ति के व्यक्तिगत रूप से जुडी होती है, परन्तु जब यह व्यक्तिगत सोच सामाजिक सोच का रूप से ले लेती है,तब इसका एक सामूहिक स्वरूप भी बन जाता है । जिसके कारण समाज भी प्रभावित होता है । इसलिए उन्होंने आत्महत्या का एक तथ्य के रूप में समाजशास्त्रीय अध्ययन किए जाने पर बल दिया । दुर्खीम द्वारा सामाजिक तथ्यों का विश्लेषण निम्नलिखित विशेषताओं के साथ उल्लेखित है ।

बाह्यपन

दुर्खीम ने सामाजिक तथ्य की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए यह बताया है कि सामाजिक तथ्य मनुष्य के बाहर रहता है तथा मनुष्य के बाहर रहते हुए भी उसके विचारों को प्रभावित करता है । इसलिए इसे समझना आसान हो जाता है ।

आन्तरिकता

दुर्खीम के अनुसार, सामाजिक तथ्य मनुष्य के बाहर भले ही रहता है, परन्तु यह व्यक्ति को आन्तरिक रूप से प्रभावित करता है । इसके प्रभाव तथा महत्व को सभी व्यक्ति अपने अन्दर अनुभव कर सकते हैं । उदाहरण के लिए समाज का जो अनुमोदन व्यक्ति को प्राप्त होता है, उसका प्रभाव मनुष्य के ऊपर उसके व्यवहार को नियन्त्रित करने में पडता है । जिसके कारण व्यक्ति अपने व्यवहार को नियन्त्रित करता है ।

सार्वभौमिकता

दुर्खीम के अनुसार, सामाजिक तथ्यों का स्वरूप सार्वभौमिक (Universality) होता है अर्थात् यह सभी व्यक्ति की चेतन अवस्था को समान रूप से प्रभावित करता है । उदाहरणस्वरूप यह कहा जा सकता है कि जब हम किसी धर्म की बात करते है, तब यह स्वीकार करते हैं कि धार्मिक विश्वास तथा उसके अनुरूप उपासना करना सभी व्यक्तियों के सामूहिक जीवन का अंग होता है अर्थात् तथ्यों के दो स्वरूप होते हैं–एक स्वरूप वह है जो व्यक्ति तक ही सीमित है और दूसरा स्वरूप उसका सामाजिक स्वरूप जो उसके कार्य करने की पद्धति, सोचने की पद्धति को व्यक्तिगत रूप से भी प्रभावित करता है । इसके साथ ही तथ्य का एक अन्य सामाजिक स्वरूप होता है । जिसके कारण व्यक्ति के अतिरिक्त पूरा समाज उससे प्रभावित रहता है ।

वस्तुनिष्ठता

सामाजिक तथ्यों की वस्तुनिष्ठता से आशय सामाजिक तथ्यों का अध्ययन बिना पूर्वाग्रहों को जाने हुए करना । इसके माध्यम से दीम ने सामाजिक पूर्व निर्धारित सोच की आलोचना करते हुए नई सोच के साथ समाजशास्त्रीय विश्लेषण करने का प्रयास किया ।

उदाहरणस्वरूप दुर्खीम ने आत्महत्या की प्रवृत्ति का विश्लेषण किया और पाया कि अविवाहित व्यक्ति में विवाहित व्यक्ति की अपेक्षा आत्महत्या का प्रवृति अधिक प्रवृति पाई जाती है । वहीं धर्म में आस्था रखने वाले व्यक्ति म भी इसकी प्रवृति कम पाई जाती है । इस प्रकार दुर्खीम ने सामाजिक तथ्यों को वस्तुनिष्ठता के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया ।

दुर्खीम का आत्महत्या का सिद्धान्त

दुर्खीम ने आत्महत्या को एक व्यक्तिगत घटना माना है जिसके कारण आवश्यक रूप से सामाजिक होते हैं । सामाजिक शक्तियाँ जिनका उद्गम व्यक्तिगत न होकर सामूहिक होता है, आत्महत्या का निर्धारण करती है । ये शक्तियाँ समाज में विभिन्न सामाजिक समूहों में तथा धर्मों में होती है । दुर्खीम के अनुसार

आत्महत्या के सिद्धान्त मनोविज्ञान, जीवविज्ञान, आनुवंशिक विज्ञान तथा भौगोलिक कारकों पर आधारित होते हैं । इसे सिद्ध करने के लिए उन्होंने आनुभविक साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं । उनका मानना है कि आत्महत्या आनुवंशिकता, तनावों आदि कारणों से नहीं होती है, परन्तु यह सामाजिक संरचना के कारण होती है, जो सम्भावित आत्महत्या को बढावा देती है ।

दुर्खीम के आत्महत्या के सम्बन्ध में विचार निम्नलिखित हैं–

- समाज की धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक एकात्मकता जितनी अधिक होगी, आत्महत्या की संख्या उतनी ही कम होगी ।
- आत्महत्या सामाजिक क्षीण व्यवस्था का परिणाम होती है । आत्महत्या की दर आयु, लिंग, धर्म, निवास स्थान, वैवाहिक स्थिति, पारिवारिक संरचनाआदि के अनुसार भिन्न–भिन्न होती है ।
- आत्महत्या का सम्बन्ध किसी व्यक्ति से ही नहीं, बल्कि पूरे समाज से होता है ।

दुर्खीम का प्रकार्यवाद (Functionism of Durkheim)

समाजशास्त्र में प्रकार्यवाद (Functionism) का प्रारम्भ स्पेन्सर से माना जाता है, किन्तु इसे वैज्ञानिक रूप से प्रतिष्ठित करने का श्रेय दुर्खीम को है । उन्होंने अपनी रचना 'द डिवीजन ऑफ लेबर इन सोसाइटी' तथा 'द रूल्स ऑफ सोशियोलॉजिकल मैथड' में प्रकार्यवाद की विवेचना की । इन्होंने समाजशास्त्र में विश्लेषण की विधि को प्रकार्यवाद का नाम दिया है । दुर्खीम के अनुसार, प्रकार्य का अर्थ ''किसी भी इकाई द्वारा उससे सम्बन्धित व्यवस्था को बनाए रखने में दिया जाने वाला योगदान है ।''

दुर्खीम के कथनानुसार, प्रकार्यात्मक पद्धति का उद्देश्य किसी भी समूह, समाज, संगठन और संस्कृति की इकाइयों को ज्ञात कर उनके प्रकार्यों को बताना है ।

दुखीम का मत है कि प्रकार्य शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है ।

1. इसका प्रयोग जीवन देने वाली गतिविधियों की व्यवस्था के रूप में कियाजाता है, जिसके परिणामों से कोई तात्पर्य नहीं रहता ।
2. दूसरा प्रयोग सम्पूर्ण व्यवस्था में उसकी आवश्यकता के रूप में कियाजाता है ।

दुर्खीम ने समाज को एक जीवधारी की भाँति माना है । जिस प्रकार शरीर को जीवित रखने के लिए कुछ आवश्यकताओं जैसे–हवा–पानी की पूर्ति आवश्यक है, वैसे ही समाज को जीवित रखने के लिए कुछ आवश्यकताओं की पूर्ति आवश्यक है । समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति जिन गतिविधियों के द्वारा होती है, उन्हें ही वह उनका प्रकार्य कहता है । परिवार, धर्म, नातेदारी, राजनीतिक संगठन तथा आर्थिक संगठन समाज व्यवस्था को चलाने में अपना जो योगदान देते है, वही उनका प्रकार्य है । दुर्खीम ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष प्रकार्यों की अवधारणा विकसित की ।

प्रकार्यवाद के लिए स्पेन्सर का प्रभाव

दुर्खीम का प्रकार्यवाद स्पेन्सर के प्रकार्यवाद से प्रभावित था । वे सामाजिक व्यवस्था में समाज की इकाई या अंग द्वारा सम्पूर्ण समाज व्यवस्था को चलाने में उसके द्वारा किए जाने वाले योगदान को ही उसका प्रकार्य मानते है । स्पेन्सर के अनुसार, ''प्रकार्य किसी इकाई का वह अवलोकित परिणाम है, जो व्यवस्था के अनुकूलन या समायोजन में योगदान देता है ।'' प्रकार्यवाद के क्षेत्र में दुर्खीम द्वारा दिए गए योगदान को ही रेडक्लिफ ब्राउन, मैलिनोवस्की, मर्टन, पारसन्स एवं लेवी स्ट्रॉस ने आगे बढाया ।

दुर्खीम के प्रकार्य का धर्म, अपराध एवं श्रम विभाजन

दुर्खीम ने प्रकार्य को स्पष्ट करने के लिए धर्म, अपराध, और श्रम विभाजन के प्रकार्यों के उदाहरण दिए हैं । वे कहते हैं कि प्रत्येक सामाजिक घटना का कोई-न-कोई प्रकार्य होता ही है अर्थात् सामाजिक व्यवस्था की स्थापना में उसका कुछ-न-कुछ योगदान अवश्य ही होता है ।

धर्म के प्रकार्य

दुर्खीम ने धर्म के प्रकार्यों का उल्लेख किया । इसके लिए उसने ऑस्ट्रेलिया की अरुण्टा जनजाति का अध्ययन कर धर्म का प्रकार्य ढूँढा । दुर्खीम के अनुसार, धार्मिक धारणाएँ सामाजिक जीवन में मजबूत कारक प्रदान करती हैं । सामाजिक व्यवस्था की यह माँग है कि व्यक्ति अपने अन्दर समाज का अनुभव करे, समाज पर अपनी निर्भरता अनुभव करे और अपने उन दायित्वों को समझे जो समाज की दृष्टि से मौलिक हैं । धर्म इस रूप में व्यक्ति में चेतना जाग्रत कर व्यक्ति के सम्मख यह स्पष्ट कर देता है कि वह पूर्णतया समाज पर निर्भर है ।

अपराध के प्रकार्य

दुर्खीम ने अपने प्रकार्यवाद में अपराध प्रकार्य का भी उल्लेख किया है । इसे ये सामाजिक विकृति मानते हैं । उनका मानना है कि समाज में सामाजिक एकीकरण तथा समाज में विघटन की प्रवृत्ति के कारण मौजूद होते हैं । विघटन व अलगाव की प्रवृत्ति, सामाजिक विकृति, अपराध जैसे प्रकार्य को भी प्रोत्साहित करती है । इनका मानना है कि समाज में दो प्रकार के नियम पाए जाते हैं । पहला नियम दमनकारी नियम होता है, जो प्रतिक्रिया को जन्म देता है, क्योंकि अपराध सामूहिक अन्तरूकरण के लिए अघात होता है । वहीं दूसरे प्रकार का नियम प्रतिबन्धात्मक होता है, जो किसी गलत कार्य होने पर व्यवस्था को बनाए रखता है । ये नियम सहकार्यात्मक होता है । इस प्रकार दुर्खीम बताते हैं कि जो लोग कुछ सामाजिक नियमों से अप्रसन्न होते हैं वे समाज को बदलने की कोशिश करते हैं, जिससे अराजकता फैलती है ।

श्रम विभाजन के प्रकार्य

दुखीम ने अपनी पुस्तक में श्रम विभाजन के प्रकार्यों का भी उल्लेख किया है । श्रम विभाजन समाज में दो प्रमुख कार्य करता है-एक तो यह कि व्यक्तियों एवं समूहों को अलग-अलग प्रकार से उनके कार्यों के आधार पर विभाजित कर देता है । इससे समाज को विशेषज्ञों की सेवाएँ उपलब्ध होती हैं । दूसरा श्रम विभाजन के कारण समाज के विभिन्न लोगों एवं समूहों में पारस्परिक निर्भरता बढती है, वे परस्पर सम्बन्धित हो जाते हैं । पारस्परिक निर्भरता वाली एकता को दुर्खीम सावयवी एकता कहता है । प्राचीन समय में श्रम विभाजन अधिक क्रियाशील नहीं था, फिर भी समाज में एकता थी । इस प्रकार दीम द्वारा बताए गए प्रकार्यात्मक विश्लेषण के आधार पर हम सामाजिक व्यवस्था की प्रत्येक इकाई के प्रकार्यों की खोज कर सकते हैं । दर्खीम का प्रकार्यवाद बाद में आने वाले समाजशास्त्रियों के प्रकार्यवाद से भिन्न है. किन्त दर्खाम का प्रकार्यवादी जगत में अपना एक पृथक स्थान रखता है । उनका प्रकार्य के विश्लेषण का ढंग निराला है जो सामाजिक व्यवस्थाओं में इकाइयों के प्रकार्यों को ढूंढने में हमारा मार्ग प्रशस्त करता है तथा दुर्खीम को एक प्रकार्यवादी के रूप में प्रतिष्ठित करता है ।

दुर्खीम की समाजशास्त्रीय परम्पराएँ

दुर्खीम ने अपनी पुस्तक 'द डिवीजन ऑफ लेबर इन सोसाइटी' में आधुनिक और पारम्परिक समाजों का अन्तर दिखाते हुए यह प्रतिपादित किया है कि आधुनिक समाज जहाँ श्रम के विशेषीकरण पर आधारित होता है, वहीं पारम्परिक समाज विश्वास पर चलता है । उनके अनुसार, समाज के रूपों का यह अन्तर नियमों की व्यवस्था के अन्तर को भी दर्शाता है । इस प्रकार आधुनिक समाज स्व-नियमन से संचालित होता है, जबकि पारम्परिक समाज के नियम बाहरी विश्वासों और अनमोदन पर आश्रित होते हैं । दुर्खीम के अनुसार, साझा विश्वास सर्वमान्य नैतिकता के प्राधिकार पर आश्रित होता है, इसलिए इस विश्वास पर आधारित व्यवस्था, शक्ति और दबाव के द्वारा ही बनी रह सकती है । जबकि स्व-नियमकारी या आधुनिक समाज स्वतन्त्रता, समानता तथा न्याय जैसे तत्वों के बिना सन्तुलित नहीं रह सकता है ।

दुर्खीम मानते हैं कि समाज के पारम्परिक और आधुनिक रूपों में विभ्रम के कारण तथा आधुनिक समाजों पर पारम्परिक कानून या नियम थोपने की प्रवृत्ति ही कई सामाजिक समस्याओं के लिए जिम्मेदार रही है । आधुनिक समाजों की यह व्यवस्था दुर्खीम की कृति की विशिष्ट उपलब्धि मानी जाती है ।

दुर्खीम व्यक्ति के सामाजिक साहचर्य या जुडाव का विश्लेषण करते हुए यह विचार भी रखते हैं कि व्यक्ति को विशेष प्रकार के सामाजिक साहचर्य की आवश्यकता पडती है । दुखीम बताते हैं कि सामाजिक संस्थाओं के अन्दर स्वतरू ही एक संसक्ति का तत्व होता है जो अपने सहभागियों से एक निश्चित व्यवहार की माँग करता है । दुर्खीम इसीलिए इस बात पर बल देते हैं कि व्यक्ति के स्थान पर सामाजिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाना चाहिए । उनके अनुसार इन सामाजिक प्रक्रियाओं का ठोस रूप संस्थाओं और व्यवहार के रूप में अभिव्यक्त होता है, जिनका अनुवीक्षण के आधार पर भी अध्ययन किया जा सकता है ।

इमाइल दुर्खीम की रचनाएँ –

- द डिविजन ऑफ लेबर इन सोसायटी, 1893
- रूल्स ऑफ सोशियोलॉजिकल मैथड, 1895
- सुसाइड, 1897
- द एलिमेण्टरी फॉर्म्स ऑफ रिलीजियस लाइफ, 1912
- एजुकेशन एण्ड सोसायटी, 1922
- सोशियोलॉजी एण्ड फिलॉसफी, 1924
- एजुकेशन मोरल, 1925
- सोशियोलिज्म, 1928

मैक्सवेबर (Max Weber)

प्रसिद्ध समाजशास्त्री, दार्शनिक, जुरिस्ट तथा राजनीतिक अर्थशास्त्री के साथ प्रशासनिक चिंतक के रूप में विख्यात मैक्स वेबर का जन्म 21 अप्रैल, 1864 को जर्मनी के एफ्फुटु (Effutu) शहर में हुआ था । ये बचपन से समाजशास्त्र नया अर्थशास्त्र जैसे विषयों में रुचि रखते थे । 1882 ई. में वेबर ने एक विधि छात्र के रूप में हीडलवर्ग विश्वविद्यालय में दाखिला लिया । आगे चलकर उन्होंने जनियर वकील के रूप में कार्य करते हुए पढाई जारी रखी । 1896 ई. में इन्होंने रेफरेंडर परीक्षा पास की, जो ब्रिटिश तथा अमेरिकी कानूनी प्रणाली में बार एसोसिएशन की परीक्षा के समकक्ष थी । 1889 ई. में इन्होंने वाणिज्यिक भागीदारी के कानूनी इतिहास पर शोध प्रबन्धक लिखकर डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की । ये बर्लिन के विश्वविद्यालय में विधि संकाय के प्रोफेसर बने । तत्पश्चात् ये अर्थशास्त्र का प्रोफेसर बनने के साथ सोशल पॉलिटिक्स में शामिल हुए । इसके अतिरिक्त इन्होंने प्रशासनिक क्षेत्र में अपना उल्लेखनीय योगदान दिया । प्रथम विश्वयुद्ध में भी इनका योगदान रहा । 14 जून, 1920 को इनकी मृत्यु हो गई ।

जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर का समाजशास्त्रीय विश्लेषण में एक महत्वपूर्ण स्थान है । मैक्स वेबर समाजशास्त्र के एक ऐसे प्रत्यक्षवादी विद्वान हैं जिन्होंने अध्ययन विधि को अपने समाजशास्त्रीय विश्लेषण से प्रभावित किया है । समाजशास्त्र की व्याख्या करते हुए मैक्स वेबर ने कहा है कि समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो सामाजिक क्रिया का निर्वचनात्मक (Interpretative Understanding) बोध कराता है जिसके कारण सामाजिक क्रिया तथा इसकी गतिविधियों तथा परिणामों की कारण सहित व्याख्या सम्भव हो पाती है ।

मैक्स वेबर का समाजशास्त्रीय सिद्धान्त
(Sociological Principles of Max Weber)

मैक्स वेबर ने सामाजिक क्रियाओं के अध्ययन पर विशेष बल दिया है । इनका मानना था की समाज का अध्ययन मूल्य से मुक्त नहीं हो सकता । सामाजिक क्रियाएँ समाजशास्त्र का एक केन्द्रीय अध्ययन विषय है । इसका उद्देश्य सामाजिक क्रिया का अर्थपूर्ण अध्ययन करने से है । वेबर ने सामाजिक क्रिया का विश्लेषण करते हुए सामाजिक क्रिया को शारीरिक क्रिया से अलग बताया है । उनका मानना है कि कोई भी शारीरिक क्रिया सामाजिक क्रिया का रूप नहीं ले सकती, क्योंकि सामाजिक क्रिया में दो या दो से अधिक व्यक्ति के बीच सम्बन्ध पाया जाना आवश्यक है ।

व्यक्तियों के बीच अन्तरक्रिया के कारण एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के सम्पर्क में आकर अपने व्यवहार को नियन्त्रित करता है । ऐसे में उन्हें एक-दूसरे की सांस्कृतिक तथा सामाजिक पृष्ठभूमि का ज्ञान होता है । जिसके कारण उनके बीच सम्बन्ध विकसित होते हैं । यदि एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से मिलने पर हाथ मिलाकर उसका अभिवादन करता है, तो दूसरा व्यक्ति भी हाथ जोडकर अभिवादन करता है । इसलिए समाज में व्यक्ति की जो आदतें विकसित होती हैं, वे प्रत्येक समाज में अलग-अलग होती हैं ।

समाजशास्त्रीय सिद्धान्त से सम्बन्धित आदर्श विधि

मैक्स वेबर ने अपनी अध्ययन विधि में 'आदर्श विधि' की अवधारणा का भी वर्णन किया है, जिसमें उन्होंने बताया है कि आदर्श प्रारूप एक विश्लेषणात्मक अवधारणा (Analytic Construct) है । इसके द्वारा एक शोधकर्ता समाज में समान तथा असमान प्रवृतियों की पहचान करता है । वेबर का कहना है कि आदर्श विधि न तो सांख्यिकी रूप से एक औसतन इकाई है और न ही यह एक उपकल्पना (Hypothesis) है ।

वह आदर्श विधि को एक मानसिक अवधारणा मानते है, जिसमें एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में बोधगम्य सम्बन्धों को संगठित कर समझने की, कोशिश की जाती है । इस प्रकार की परिस्थितियों का निरीक्षण कर इन्होंने वैज्ञानिक दृष्टिकोण से एक पक्षीय दृष्टिकोण को अपनी विश्लेषणात्मक अवधारणा का आधार बनाया ।

आदर्श प्रारूप एक अमूर्त अवधारणा है जिसकी कल्पना शोधकर्ता शोध से सम्बन्धित समुचित ज्ञान प्राप्त कर करता है । आदर्श प्रारूप का तीन स्तर पर वर्णन किया गया है, जो निम्नलिखित है–

1. ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण घटनाओं का आदर्श प्रारूप जिसमें पश्चिमी देश, प्रोटेस्टेण्ट ऐथिक तथा आधुनिक पूँजीवाद को आदर्श प्रारूप में चित्रित किए जाने की प्रक्रिया है ।
2. आदर्श प्रारूप ऐतिहासिक तथ्यों के अमूर्त तत्वों का विश्लेषण भी करता है जिसको अनेक ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक सन्दर्भ में देखा जा सकता है । जैसे–'अधिकारी तन्त्र' तथा 'सामन्तवाद' ।
3. आदर्श प्रारूप विवेकपूर्ण तथा तर्कसंगत तरीके से एक विशेषप्रकार के व्यवहार द्वारा तैयार किया जाता है । वेबर का कहना था कि आदर्श प्रारूप का अर्थ नैतिक मूल्यों से जोडकर नहीं देखा जाना चाहिए और न ही इसे आदर्श क्रिया के रूप में देखा जाना चाहिए ।

समाजशास्त्रीय सिद्धान्त से सम्बन्धित पूँजीवाद

वेबर ने पूँजीवादी सोच की व्याख्या करते हुए आधुनिक समाज के लक्षणों की एक सूची तैयार की तथा उन लक्षणों के आधार पर जो पंजीपति समाज के सामान्य लक्षण थे उन्हें उन्होंने आदर्श रूप में रखा । अनेक सामाजिक क्रियाओं का ऐतिहासिक सन्दर्भ में अध्ययन करने के बाद उन्होंने निम्न चार सामाजिक क्रियाओं का उल्लेख किया है

1. तार्किक क्रियाएँ (Rational Actions) तार्किक क्रियाओं सेअभिप्राय उन क्रियाओं से है जो तर्क और विवेक पर आधारित होती है । इन क्रियाओं में साधन तथा लक्ष्य, दोनों में एक विवेकपूर्ण सम्बन्ध स्थापित होता है ।
2. मूल्यों पर आधारित क्रियाएँ (Value Oriented Action) यह वह क्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने व्यवहार को अपने मूल्यों की कसौटी पर खरा उतारता है, जैसे–एक जहाज के कैप्टन का डूबते जहाज से उतर कर नहीं भागना ।
3. संवेगात्मक क्रियाएँ (Emotional Actions) मनुष्य कीसंवेगात्मक क्रियाएँ उन क्रियाओं का बोध कराती है जो मनुष्य के संवेग पर आधारित होती है । किसी व्यक्ति का धार्मिक विश्वास, उसके परिवार के सदस्यों के साथ उसका सम्बन्ध, उसके सभीसंवेगों या संवेदनाओं पर आधारित होता है ।

4. परम्परागत क्रियाएँ (Traditional Actions) इन क्रियाओं मेंसामाजिक क्रियाओं तथा परम्परा का महत्वपूर्ण स्थान होता है जिसके कारण व्यक्ति के व्यवहार परम्परा से जुडे होते हैं । एक संयुक्त परिवार के सदस्य कई धार्मिक कार्यों का पालन परम्परा से जुडे होने के कारण करते हैं । ठीक उसी प्रकार कुछ सामाजिक परम्पराएँ होती हैं, जिसका पालन व्यक्ति समाज के सदस्य होने के नाते करते हैं ।

वेबर का मानना था कि आधुनिक समाज में जो सामाजिक क्रियाएँ होती हैं, उन सभी सामाजिक क्रियाओं को तार्किक सामाजिक क्रिया से जोडकर देखा जाना चाहिए । यह आवश्यक नहीं है कि आधुनिक समाज में जिन सामाजिक क्रियाओं को हम देखते हैं, वे सभी तार्किक क्रियाओं के अन्तर्गत आती हों, बल्कि आधुनिक समाज में मूल्यों पर आधुनिक क्रियाएँ संवेगों पर आधारित क्रियाओं के साथ-साथ पम्परागत क्रियाओं को भी व्यवहार में प्रयोग करते देखा जा सकता है । इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि सामाजिक क्रियाएँ एक स्वतन्त्र रूप में पाई जाने वाली क्रियाएँ हैं ।

मैक्स वेबर का पद्धतिशास्त्र

(Methodology of Max Weber)

समाजशास्त्रीय अध्ययन के सिद्धान्त में वेबर के पद्धतिशास्त्र (Methodology) का महत्वपूर्ण योगदान है । वेबर ने प्राकृतिक विज्ञान एवं समाजशास्त्र में प्राकृतिक घटना एवं सामाजिक क्रिया के आधार पर भेद किया है । प्राकृतिक घटनाएँ न तो अर्थपूर्ण होती है और न ही उसका कोई उद्देश्य होता है, जबकि सामाजिक क्रियाएँ अर्थपूर्ण एवं उद्देश्यपरक होती है । प्राकृतिक विज्ञान में सार्वभौमिक नियम पाए जाते है. जो सभी समयों, स्थानों एवं कालों में समान होते हैं, लेकिन समाजशास्त्रीय नियम में ये विशेषता नहीं पाई जाती है । वेबर के पद्धतिशास्त्र की विशेषताएं निम्नलिखित है ।

- वेबर के समाजशास्त्र को निर्वचनात्मक या अवबोधन समाजशास्त्र कहा जाता है । क्योंकि वेबर ने समाजशास्त्र में सामाजिक क्रियाओं में अर्थपूर्ण अवबोधन परबल दिया है ।
- प्राकृतिक विज्ञान की भाँति वेबर ने सामाजिक घटनाओं को समझने के लिएकार्य-कारण सम्बन्धों के आधार पर व्याख्या करने पर बल दिया ।
- वेबर ने तुलनात्मक अध्ययन पद्धति अपनाने पर बल दिया है, क्योंकि इस विधिके द्वारा हम समाज की समानता और असमानता को ज्ञात कर सकते है ।
- वेबर ने घटनाओं के अध्ययन के लिए कुछ चयनात्मक तथ्यों के ही अध्ययनकरने पर बल दिया है तथा जो तथ्य उचित नहीं है, उसे छोड देने को कहा है ।
- वेबर ने सामाजिक घटनाओं की वस्तुनिष्ठता पर बल दिया है और मूल्यांकनात्मक निर्णयों से दूर रहने की बात की है, क्योंकि मूल्यांकनात्मक अध्ययन वैज्ञानिक अध्ययन नहीं हो सकता है ।
- समाजशास्त्र में 'क्या है', का अध्ययन होना चाहिए क्या होना चाहिए'का नहीं' । अच्छा-बुरा, सही-गलत, उचित-अनुचित आदि के आधार पर व्याख्या मूल्यांकनात्मक होनी चाहिए, वैज्ञानिक नहीं ।

मैक्स वेबर का धर्मशास्त्र

(Theology of Max Weber)

समाजशास्त्रीय अध्ययन में वेबर के धर्मशास्त्र (Theology) का योगदान उल्लेखनीय है । उन्होंने विश्व के सभी धर्मों का अध्ययन कर धर्म तथा आर्थिक व सामाजिक घटनाओं के बीच सम्बन्ध दर्शाने का प्रयत्न किया है ।

वेबर ने विश्व के छरू प्रमुख धर्म हिन्दू, बौद्ध, इस्लाम, यहूदी, कन्फ्यूशियस एवं ईसाई का अध्ययन किया । अध्ययन के पश्चात् उन्होंने यह बताया कि आधुनिक पूँजीवाद केवल पश्चिमी देशों में ही सबसे पहले क्यों आया । इसके लिए उन्होंने विभिन्न धर्मों में पाई जाने वाली धार्मिक आचार पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन किया तथा उनका आर्थिक व सामाजिक संगठनों से सम्बन्धों का विश्लेषण किया । मार्क्स की भाँति वेबर भी सामाजिक संरचना एवं सामाजिक जीवन में आर्थिक कारक को ही महत्वपूर्ण मानते हैं, परन्तु मार्क्स की भाँति वे आर्थिक कारकों को मानव के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक, कलात्मक और दार्शनिक जीवन को निर्धारित करने वाला एकमात्र कारक नहीं मानते हैं । वेबर ने धर्म की समाजशास्त्रीय विवेचना कर निम्नलिखित निष्कर्ष दिए–

- धार्मिक एवं आर्थिक घटनाएँ परस्पर एक–दूसरे पर निर्भर होती हैं । इनमें से किसी एक को निर्णायक मानना उचित नहीं है । ये दोनों एक–दूसरे को प्रभावितकरती है ।
- धार्मिक एवं आर्थिक आधार पर किसी घटना की विवेचना नहीं करनी चाहिए,वरन अन्य कारकों का भी ध्यान रखना चाहिए ।
- वेबर ने धार्मिक कारक को एक परिवर्तनीय तत्व मानकर उसका आर्थिकतथा अन्य सामाजिक घटनाओं पर प्रभाव ज्ञात करने का प्रयत्न किया है ।
- वेबर ने सभी धर्मों का उल्लेख न कर केवल उसके आदर्श प्रारूप काउल्लेख किया है । इसी प्रकार उन्होंने अपने आर्थिक कारकों के भी आदर्श प्रारूपों को ज्ञात किया । उन्होंने धर्म के अध्ययन में आदर्श–प्रारूप कीअवधारणा का प्रयोग किया है ।

मैक्स वेबर की रचनाएँ

- द प्रोटेस्टेण्ट एथिक एण्ड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म, 1905
- द रिलीजन ऑफ इण्डिया, 1916
- द रिलीजन ऑफ चाइना, 1916
- द थ्योरी ऑफ सोशियल एण्ड इकोनोमिक ऑर्गनाइजेशन, 1922
- द सिटी, 1922
- द मैथडोलॉजी ऑफ सोशल साइंस
- जनरल इकोनोमिक हिस्ट्री
- द रेशनल एण्ड सोशियल फाउण्डेशन ऑफ म्युजिक